13

मसीह के दास

''परन्तु अब पाप से स्वतन्त्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है'' (रोमियों 6:22)।

कुछ वर्ष पूर्व मैं एक शृंखला में सुसमाचार का संदेश देने के लिए मोडेस्टो, केलिफोर्निया में था। मेरा परिवार मेरे साथ था, और दो दिन की प्रार्थना सभा के दौरान हमें वहां एक मसीही परिवार ने अपने घर में ठहराया। उन्होंने मुझे और सूसन को काफ़ी बड़े शयन कक्ष में रखा। दूसरे दिन हम उनके साथ काफ़ी व्यस्त थे, और मुझे व्यायाम करने का समय भी रात के दस बजे के बाद अर्थात प्रार्थना के बाद ही मिल पाया। आधा घंटा सैर करने के बाद घर पहुंचने तक काफ़ी रात हो चुकी थी। केवल बैठक की लाइट ही जल रही थी। हमारे मेज़बानों ने मेरे लिए द्वार खुला रखा था, सो मैं सामने के दरवाजे से उस शयन कक्ष में आ गया जो उन्होंने हमें दिया हुआ था। आते-आते, मैं बैठक को उनके सोने के कमरे में बदले होने को देखे बिना रह न पाया। सोफे को पलंग बनाया हुआ था और वह दम्पत्ति जिन्होंने हमें अपने घर में रखा हुआ था, उस सोफे पर सो रहे थे। मुझे बड़ा सदमा लगा कि ये दो मसीही लोग सचमुच के सेवक हैं। उन्होंने हमें अपना सबसे अच्छा सोने का कमरा दे दिया था जबकि स्वयं वे बैठक में सो रहे थे! मसीही विचार के अनुसार, उन्होंने हमें प्राथमिकता देकर अपने आपको पीछे कर लिया था!

नये नियम के अनुसार, इस दम्पत्ति को कलीसिया की एक तस्वीर होना चाहिए। कलीसिया राजाओं और रानियों से नहीं बल्कि सेवकों से बनती है! हमारे उद्धारकर्त्ता और कलीसिया के सिर ने कहा है, ''... जो तुम में प्रधान होना चाहे, वह तुम्हारा दास बने; जैसे कि मनुष्य का पुत्र, वह इसलिए नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिए आया कि आप सेवा टहल करे; और बहुतों की छुड़ौती के लिए अपने प्राण दे'' (मत्ती 20:27, 28)। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं कि पौलुस ने मसीह के अनुयायियों के लिए लिखा, ''विरोध या झूठी बड़ाई के लिए कुछ न करो पर दीनता से एक दूसरे को अपने से अच्छा समझो। हर एक अपने ही हित की नहीं, वरन दूसरों के हित की भी चिन्ता करे''

(फिलिप्पियों 2:3, 4)। पतरस ने भी मसीह की कलीसिया को समझाया, ''अपने आपको स्वतन्त्र जानो पर अपनी इस स्वतंत्रता को बुराई के लिए आड़ न बनाओ, परन्तु अपने आपको परमेश्वर के दास समझकर चलो'' (1 पतरस 2:16)।

कलीसिया को हम जब तक मसीह के सेवकों की एक देह के रूप में नहीं मानते, तब तक मसीह की सच्ची कलीसिया के स्वभाव के मुख्य पहलू को समझ पाना असम्भव है। कलीसिया के अर्थ और जीवन में सेवक होने की धारणा का गहरा सम्बन्ध है। यह विचार मसीह से ही आरम्भ होता है जो कलीसिया को बनाने वाला और उसका सिर है, और आगे बढ़कर प्रत्येक सदस्य के लिए एक मापदण्ड ठहराता है। कोई कलीसिया जो मसीह की कलीसिया होने का दावा तो करती है परन्तु स्पष्ट शब्दों में, दृढ़ता से संसार में सेवक का काम नहीं करती। वह, वह करती है, जो वह है नहीं।

कलीसिया के इस गुण के विशेष महत्व के कारण, हमें सावधानीपूर्वक विचार करना चाहिए कि हम, अर्थात मसीह की कलीसिया, मसीह के सेवक हों।

पदनाम में

पहले, हम अपने पदनाम में सेवकों के रूप में अपनी भूमिका को देखते हैं। भाव यह कि कलीसिया के मसीह के सेवकों के बने होने की बात का संकेत कलीसिया के लिए इस्तेमाल की गई वर्णनात्मक अभिव्यक्तियों के द्वारा नये नियम में मिलता है। स्पष्टत: मसीह अपने लोगों को सेवक बनाना चाहता था, वरना वह अपनी कलीसिया को इतना महत्वपूर्ण न बनाता।

उसने अपने अनुयायियों को एक सेवक का चित्र बनाकर सचमुच में महान होने का अर्थ बताया: ''यीशु ने उन्हें पास बुलाकर, कहा, तुम जानते हो, कि अन्य जातियों के हाकिम उन पर प्रभुता करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर अधिकार जताते हैं। परन्तु तुम में ऐसा न होगा; परन्तु जो कोई तुम में बड़ा होना चाहे, वह तुम्हारा सेवक बने'' (मत्ती 20:25, 26)। मसीह के अनुसार, महान होने का अर्थ की गई सेवा में मिलता है, इस बात से नहीं कि किसी के पास कितना धन, सम्पत्ति या पद है।

पौलुस ने दिखाया कि मसीह में आने के समय व्यक्ति पाप में होता है, परन्तु मन परिवर्तन के बाद वह धार्मिकता का दास बन जाता है (रोमियों 6:17, 18)। मसीही लोग अपनी नहीं बल्कि विशेष रूप से परमेश्वर की निजी सम्पत्ति हैं: ''क्योंकि दाम देकर मोल लिए गए हो, इसलिए अपनी देह के द्वारा परमेश्वर की महिमा करो'' (1 कुरिन्थियों 6:20)। जीएं या मरें, हम प्रभु के हैं: ''क्योंकि हम में से न तो कोई अपने लिए जीता है और न कोई अपने लिए मरता है। क्योंकि यदि हम जीवित हैं, तो प्रभु के लिए जीवित हैं और यदि मरते हैं, तो प्रभु के लिए मरते हैं; सो हम जीएं या मरें, हम प्रभु ही के हैं'' (रोमियों 14:7, 8)।

हमारे परमेश्वर और मसीह के सेवक होने की बात हमारे द्वारा एक दूसरे की सेवा करने में देखी जानी चाहिए। इसीलिए, हमें ''मसीह के भय में एक दूसरे के अधीन'' (इफिसियों 5:21) रहने के लिए कहा गया है, जो अपनी इच्छा नहीं बल्कि अपने भाई की भलाई और आत्मिक जीवन पर ध्यान करने वाले हैं। पौलुस ने लिखा है, ''यदि तेरा भाई तेरे

भोजन के कारण उदास होता है, तो फिर तू प्रेम की रीति से नहीं चलता: जिस के लिए मसीह मरा उस को तू अपने भोजन के द्वारा नाश न कर। ... जो कोई इस रीति से मसीह की सेवा करता है, वह परमेश्वर को भाता है और मनुष्यों में ग्रहणयोग्य ठहरता है'' (रोमियों 14:15, 18)। इसलिए, मसीह के सेवक होने के कारण, हमें ''भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया'' रखने और ''दूसरों का आदर करने में एक दूसरे से'' बढ़ने की आज्ञा दी गई है (रोमियों 12:10)। हमें यह भी आज्ञा मिली है कि, ''हे भाइयो, तुम स्वतंत्र होने के लिए बुलाए गए हो परन्तु ऐसा न हो, कि यह स्वतंत्रता शारीरिक कामों के लिए अवसर बने, वरन प्रेम से एक दूसरे के दास बनो'' (गलतियों 5:13)।

मसीह के सेवक संसार में उसकी इच्छा पूरी करने के लिए हैं। वे अपने नहीं बल्कि उसके सुसमाचार का प्रचार करते हैं; वे उसके उद्देश्य को पूरा करने की चाह रखते हैं न कि अपनी योजनाओं को। पौलुस के साथ वे कहते हैं, ''मैं क्या मनुष्यों को मनाता हूं या परमेश्वर को? क्या मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूं? यदि मैं अब तक मनुष्यों को प्रसन्न करता रहता, तो मसीह का दास न होता'' (गलतियों 1:9, 10)।

सिकन्दर महान की सेना के एक सिपाही की कहानी का वर्णन किया जाता है। उस जवान सिपाही का पहला नाम सिकन्दर था। उसने ऐसी गलती की थी जो पूरी तरह से सिकन्दर की शक्तिशाली सेना में किसी-सिपाही के चरित्र के विपरीत थी। उसके दुराचार का पता चल गया, और उसे न्याय के लिए राजा के सामने लाया गया था। सिकन्दर ने उसका नाम पूछा। सिपाही ने बड़े आराम से कह दिया, ''सिकन्दर।'' महान सेनापति ने उसे घूरते हुए कहा, ''सिपाही, या अपना जीवन बदल लो या फिर नाम!''

कलीसिया को परमेश्वर के पवित्र आत्मा के द्वारा एक नाम दिया गया है। ''कलीसिया वैसी कैसे बन सकती है जैसी मसीह ने इसे संसार में बनाना चाहा था?'' का उत्तर पवित्र शास्त्र में निर्णायक ढंग से दिया गया है: ''जैसा तुम्हारा नाम है उसी के अनुसार जीवन बिताओ! जिस नाम से तुम्हें जाना जाता है वैसे ही बनो। मसीह के सेवक बन जाओ।''

विंस्टन चर्चिल ने कहा था, ''किसी में कोई गुण उत्पन्न करने का सबसे अच्छा तरीका यह है कि उन में वह गुण भी डाल दिया जाए।'' परमेश्वर हमें अपने सेवक कहकर हम में वह गुण डालकर अपने लोगों में सेवक होने के गुण भरता है।

स्पष्टत:, इससे पहले कि हम सेवक बनें, यह आवश्यक है कि हमारी सोच वैसी ही बन जाए जैसी सेवकों की होती है। आइए सेवक की सोच को अपनाएं। यह न पूछें कि, ''मुझे इससे क्या लाभ होगा?'' बल्कि यह पूछें, ''मैं अपने भाई की सहायता कैसे कर सकता हूं? मसीह में बढ़ने और विश्वास में दृढ़ होने के लिए मैं उसकी क्या सहायता कर सकता हूं?'' यह न कहें कि, ''प्रभु, तू ने हाल ही में मेरे लिए क्या किया है?'' बल्कि यह कहें कि, ''हे प्रभु, मैं आया हूं। मुझे भेज!''

इच्छा में

हम मसीह के सेवक केवल नाम से ही नहीं बल्कि इच्छा में भी हैं। उसकी सच्ची

कलीसिया की कोई और अभिलाषा ही नहीं। अन्य सभी अभिलाषाओं से बढ़कर, उसके लोग उसकी सेवा करना चाहते हैं।

मसीह के आने से पहले, हमें कोई आशा नहीं थी और हम अनन्त निराशा में थे। कोई हमारी सहायता नहीं कर सकता था। मनुष्य का बनाया कोई ढंग हमारे उद्धार के किसी काम का नहीं था। समस्त विश्वविद्यालयों तथा शिक्षा केन्द्रों की पढ़ाई हमारे छुटकारे का कोई मार्ग नहीं निकाल सकती थी। हमारे लिए एकमात्र सम्भावना परमेश्वर का हस्तक्षेप ही था।

फिर, परमेश्वर ने मसीह को हमारे स्वर्गीय उद्धारकर्त्ता के रूप में इस पृथ्वी पर भेजा। वह परमेश्वरत्व का दूसरा सदस्य होने के बावजूद पूरी तरह से मनुष्य बन गया। परमेश्वर के रूप में अनन्तकाल में वह अपनी महिमा का स्थान छोड़कर आ गया और हमारे जैसा बन गया, ताकि हमारे लिए मृत्यु का स्वाद चख सके (इब्रानियों 2:9)। वह नि:स्वार्थ रूप से स्वर्ग की महिमा छोड़कर पृथ्वी की दीनता में आ गया। वह पूर्ण रूप से इतना मनुष्य बन गया कि उसने हर तरह से वैसे ही दुख सहे जैसे हम सहते हैं और वैसे ही मृत्यु सही जैसे हम सब पर आती है। उसने यह सब इसलिए किया ताकि हमारे सामने सिद्ध जीवन का उदाहरण पेश कर सके और हमारे लिए पाप की भेंट के रूप में अपना जीवन भेंट कर सके। पाप का हमारा दोष एक कर्ज़ बन गया था जिसे केवल परमेश्वर के ईश्वरीय पुत्र के पापरहित जीवन से ही चुकाया जा सकता था।

उसे इस पृथ्वी पर एक पल भी बिताने की आवश्यकता नहीं थी, परन्तु वह यहां आ गया क्योंकि वह हमसे प्रेम करता था और हमारा उद्धार चाहता था। उसे दुख या पीड़ा सहने की कोई आवश्यकता नहीं थी, परन्तु हमारे उद्धार के लिए वह क्रूस की अकल्पनीय पीड़ा सहने के लिए आ गया। बेशक क्रूस पर मरने के लिए उसे पिता ने नहीं भेजा था; परन्तु आया वह अपनी स्वेच्छा से ही था क्योंकि वह हमें उद्धार देना चाहता था (यूहन्ना 10:18)। हमारे लिए उसके प्रेम में कोई गुप्त एजेंडा अर्थात कोई व्यक्तिगत या स्वार्थी योजना नहीं थी। इसमें कोई कपट नहीं था, कोई झूठा दिखावा नहीं था बल्कि पवित्रता और निष्कपटता थी।

इसलिए हम यीशु के इतने कर्ज़दार हैं जिसे शब्दों में ब्यान नहीं किया जा सकता। पहली बात, हमें उसकी ओर से *छुटकारा* मिला है: ''हम को उस में उसके लोहू के द्वारा छुटकारा, अर्थात अपराधों की क्षमा, उसके उस अनुग्रह के धन के अनुसार मिला है'' (इफिसियों 1:7); ''...तुम्हारा निकम्मा चाल-चलन जो बाप-दादों से चला आता है उससे तुम्हारा छुटकारा चान्दी सोने अर्थात नाशमान वस्तुओं के द्वारा नहीं हुआ। पर निर्दोष और निष्कलंक मेमने अर्थात मसीह के बहुमूल्य लोहू के द्वारा हुआ'' (1 पतरस 1:18, 19)।

दूसरा, हमें उसकी ओर से एक *दान* मिला है। हमारी योग्यताएं तथा सम्पत्तियां उसकी ओर से बहुमूल्य दान ही हैं। ''... और तेरे पास क्या है जो तू ने (दूसरे से) नहीं पाया: और जब कि तू ने (दूसरे से) पाया है, तो ऐसा घमण्ड क्यों करता है, कि मानो नहीं पाया?'' (1 कुरिन्थियों 4:7)।

तीसरा, उसने हमें *पहचान* दी है। उसके लहू के द्वारा छुटकारा पाकर और उसके अनुग्रह से उसकी सेवा के लिए दान पाकर, हम उसके भंडारी बन गए हैं। हम पूरी तरह से

उसी के हैं। हम अपनी किसी भी चीज़ को अपना नहीं कहते। अपने सिर के बालों से लेकर पांवों की तलियों तक, हम उसी की सम्पत्ति हैं। हमारी एकमात्र इच्छा उसकी सेवा करना ही है। जो कुछ उसने हमारे लिए किया है उसके कारण, हमारे लिए यह सब करना बहुत आवश्यक है।

एक गुलाम लड़की की कहानी है जिसे अमेरिकी गृहयुद्ध से थोड़ा पहले नीलाम किया जाना था। उसकी उम्र उन्नीस वर्ष से अधिक थी। गुलाम न होती, तो उसे जीवन आनन्ददायक लगता और वह एक सुखद यात्रा आरम्भ करते हुए भविष्य में प्रवेश करती। परन्तु वह तो एक गुलाम थी, और उसकी आंखों से उसके मन का भय दिखाई देता था। वह बोली लगाकर खरीदने को तैयार भीड़ को देखकर, अपने भविष्य के बारे में सोचकर कांप गई। शीघ्र ही नीलामकर्त्ता का ज़ोरदार स्वर हवा में गूंजने लगा, बोली बढ़ती गई। अन्ततः, बोली रुक गई और नीलामकर्त्ता के प्रभावशाली और कम्पकम्पा देने वाले स्वर में ''बिक गई'' कहने पर भीड़ शांत हो गई। इस शब्द से, टकटकी लगाए हुए वह युवती कांप गई और वह भीड़ में यह देखने लगी कि उसे अपनी सम्पत्ति बनाने वाला कौन आ रहा है। एक अधेड़ उम्र का व्यक्ति भीड़ में से आगे आया। उसने आगे बढ़कर बोली की राशि अदा कर दी। फिर वह मुड़कर उसकी ओर बढ़ा। उसे हाथ से पकड़कर वह भीड़ में से ले गया। उसे बिना कुछ कहे, उसने कागज का एक टुकड़ा निकाला और इस पर लिख दिया, ''आज के दिन, मैंने तुझे खरीद लिया है, और मैंने तुझे तेरी स्वतन्त्रता लौटा दी है।'' कागज़ के नीचे, उसने अपने हस्ताक्षर करके उस युवती को स्वतन्त्र करने का दस्तावेज पकड़ा दिया। कांपते हाथों और थरथराते हुए भावुक होकर उसने हैरानी से कि यह सपना नहीं बल्कि वास्तविकता है, उस कागज़ को अपने सीने से लगा लिया। फिर, इसका अहसास होने पर वह गिर पड़ी और उस व्यक्ति के पांव पड़कर कहने लगी, ''महोदय, मैं प्रसन्नता से, अपनी इच्छा से और स्वतन्त्रता पूर्वक आपकी दासी बनकर रहूंगी।''

कलीसिया की तस्वीर भी इस लड़की जैसी ही है। हम पाप के दास थे और हमारे जीवन शैतान के बंधन में पड़े हुए थे, उसकी बुरी इच्छाओं के वश में थे, परन्तु यीशु ने हमें अपने लहू से मोल लेकर स्वतन्त्र कर दिया। अब हम उसके लिए जीवित हैं। हम उसके पांवों में गिरकर जो कुछ उसने हमारे लिए किया है उसके लिए न खत्म होने वाले प्रेम और प्रशंसा में उसके प्रति वफ़ादार हैं।

जो भी मसीही व्यक्ति मसीह का सेवक बनने की अभिलाषा नहीं करता वह मसीह का कर्ज़ नहीं लौटाता। उसके बिना हम कुछ भी नहीं होंगे। अपने मन में एक शून्य बनाएं और उस शून्य के छिद्र को तब तक बड़ा करते रहें जब तक वह पृथ्वी से भी बड़ा न हो जाए। केवल तभी आपको वह शून्य मिल पाएगा जिससे यह समझाया जा सके कि मसीह के बिना हम कैसे होंगे! मसीह के बिना हम शून्य से भी कम थे! जो कुछ मसीह ने हमारे लिए किया है उसका अहसास हमें प्रतिदिन उसकी सेवा में अपनी कृतज्ञता को व्यक्त करने के लिए विवश करता है।

प्रदर्शन में

तीसरा, हम जो मसीह की कलीसिया हैं, मसीह के सेवक हैं। जो जीवन जीने के लिए हमें बुलाया गया है, जो उद्देश्य हमें मिला है और जिस संदेश का हम प्रचार करते हैं, उसमें सेवक होने की आत्मा ही दिखाई देती है।

सेवक होना मसीही जीवन की पहचान है। यह इसलिए सत्य है क्योंकि मसीही जीवन का अर्थ ''मसीह-हम-में'' जीवन है, और मसीह संसार के सेवकों में से सबसे बड़ा सेवक था। पौलुस ने लिखा है, ''मैं मसीह के साथ क्रूस पर चढ़ाया गया हूं, और अब मैं जीवित न रहा, पर मसीह मुझ में जीवित है: और मैं शरीर में अब जो जीवित हूं, तो केवल उस विश्वास से जीवित हूं, जो परमेश्वर के पुत्र पर है, जिस ने मुझ से प्रेम किया, और मेरे लिए अपने आप को दे दिया'' (गलतियों 2:20)। हमें पौलुस को एक सेवक का जीवन बिताते हुए देखकर हैरान नहीं होना चाहिए क्योंकि वह नि:स्वार्थ था और उसका जीवन बलिदानपूर्वक था, अर्थात न उसमें स्वार्थ था और न ही अपनी सेवा करने की बात। उसने हमें लिखा है, ''जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो'' (फिलिप्पियों 2:5)। यदि हम उसकी ताड़ना को मानते हैं और मसीह का मन रखते हैं, तो हम दूसरों के बारे में सोचेंगे और दूसरों के लिए जीएंगे:

> जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया। और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली (फिलिप्पियों 2:6-8)।

मसीह का मन अपने आपको खाली करने वाला था। उसने अपनी स्वर्गीय महिमा को एक ओर रखकर, मनुष्यों अर्थात अपनी ही सृष्टि का सेवक बनकर मनुष्य के उद्धार के लिए अपने आपको क्रूस के लिए दे दिया। उसकी तरह जीने के लिए सेवक बनकर ही जीना होगा।

जो उद्देश्य मसीह ने अपने लोगों को दिया है उसे सेवक बने बिना पूरा नहीं किया जा सकता। सीमित आज्ञा (लिमिटेड कमीशन) देकर उन्हें भेजते हुए यीशु ने अपने चेलों से कहा था, ''तुमने सेंतमेंत पाया है, सेंतमेंत दो'' (मत्ती 10:8)। अपने चेलों को अन्तिम अर्थात विश्वव्यापी आज्ञा देते हुए, उसने उन्हें सेवक का काम सौंपा था: ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो'' (मरकुस 16:15)। उसकी आज्ञा को पूरा करने के लिए, हम में से बहुत से लोगों को अपने पीछे सम्पत्तियों और अपनी प्रिय संस्कृतियों को छोड़कर जाना होगा; और शेष को जाने वालों को भेजने के लिए उन पर खर्च किया जाने वाला धन बलिदानपूर्वक देकर उन्हें भेजना होगा। जाने और भेजने वाले दोनों ही सेवकों की भूमिका निभा रहे होंगे। मिशन कार्य में कोई भी व्यक्ति धनी बनने के लिए नहीं जाता, और न

ही कोई धनी होने के लिए देता है। दोनों ही मसीह के सेवकों के रूप में काम करते हैं।

जिस संदेश का हम प्रचार करते हैं, वह हमारा अपना नहीं है। हमने कोई पत्री नहीं लिखी; हम तो केवल लोगों के सेवक हैं जो मसीह के लिखे पत्र को लोगों तक पहुंचाते हैं। हम इस बात का ध्यान रखते हैं कि जो संदेश उसने भेजा है, उसे तोड़ा मरोड़ा या छुपाया न जाए। हमें अपने राजा की ओर से इसे दोबारा लिखने की कोई आज्ञा नहीं है; हमें केवल यह ध्यान रखने की आज्ञा है कि इसे इसी रूप में लोगों तक पहुंचाया जाए। इसलिए, उस दया और प्रेम के कारण, हम हर सम्भव तरीके से उसके संदेश को लिखकर, रेडियो और टीवी से, पुलपिटों से, लोगों से मिलकर और अपना उदाहरण देकर समझाते हैं। हम उसके संदेश को अपनी व्यक्तिगत सुविधा और स्वप्नों से भी बढ़कर पहला स्थान देते हैं। इसके प्रचार के लिए, हम अपनी योग्यताएं, अपना धन, अपना समय, अपने मन, अपने हाथ और अपने पांव और हां अपने मन भी दे देते हैं।

हमारा राजा अन्य सभी राजाओं से बहुत भिन्न है! वह राजाओं का राजा सृष्टिकर्त्ता और सारी सृष्टि को सम्भालने वाला तो है, फिर भी वह हमारे बीच एक सेवक के रूप में रहा। यह सच्चाई विशेष रूप से अन्तिम भोज के समय यीशु द्वारा अपने चेलों के पांव धोने की घटना में उजागर होती है (यूहन्ना 13:1-16)। जब पृथ्वी का कोई राजा लोगों में आता है, तो लोग उसके सामने झुककर उसके पांव छूने के लिए जाते हैं। जब पोप अपने लोगों के बीच आता है, तो वे उसके सामने झुककर उसका हाथ चूमना चाहते हैं। परन्तु जब मसीह अपनी मृत्यु से पूर्व की रात अपने चेलों के साथ था तो उसने एक बर्तन में पानी डालकर उनके पांव धोए थे।

उसने उनके पांव क्यों धोए? इसलिए नहीं कि उसके लिए ऐसा करना आवश्यक था या कोई और ऐसा नहीं कर सकता था। उसने उनके पांव केवल इसलिए नहीं धोए क्योंकि उसे पता था कि ऐसा नमूना उसके चेलों के लिए लाभदायक होगा। उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि वह परमेश्वर का पुत्र और मनुष्यों का सेवक है। वह एक सेवक के रूप में आया और सेवक बनकर रहा और सेवक के रूप में ही मरा। उसके लिए दूसरों की सेवा करना चलने और खाना खाने की तरह स्वाभाविक है। उसके चेले होने के कारण वह हमें अपने अनुयायियों जैसा जीवन जीने के लिए कहता है:

> ''तुम मुझे गुरु, और प्रभु, कहते हो, और भला कहते हो, क्योंकि मैं वही हूं। यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पांव धोए; तो तुम्हें भी एक दूसरे के पांव धोना चाहिए। क्योंकि मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है, कि जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो। मैं तुम से सच सच कहता हूं, दास अपने स्वामी से बड़ा नहीं; और न भेजा हुआ अपने भेजनेवाले से'' (यूहन्ना 13:13-16)।

हमें यीशु की तरह ही चलना चाहिए। सेवा करने का मसीही जीवन, उद्देश्य तथा संदेश से इतना गहरा सम्बन्ध है कि हम दूसरों की सेवा करने का विचार किए बिना सच्चा मसीही जीवन जी ही नहीं सकते।

यदि आप हैरान हैं कि आप एक सेवक बनकर कैसे रह सकते हैं, तो केवल वही करें जो मसीह आपसे करने के लिए कहता है। आप पाएंगे कि आप उसकी इच्छा को सेवक बने बिना पूरा नहीं कर सकते। आप उसका सुसमाचार दूसरों को सेवक बने बिना नहीं सिखा सकते; आप सेवक बने बिना निर्धनों की सम्भाल वैसे नहीं कर सकते जैसे उसने करने के लिए कहा; एक सेवक के हृदय के बिना आप उस उद्देश्य को पूरा नहीं कर सकते जो उसने आपको दिया है।

सारांश

नया नियम यह स्पष्ट करता है कि कलीसिया मसीह के सेवकों से बनती है। पदनाम में, इच्छा में, और प्रदर्शन में हम उसके सेवक हैं। क्रूस के नीचे की भूमि समतल है। कोई सेवक एक दूसरे से ऊंचा नहीं है और न ही किसी सेवक को दूसरे सेवक से नीचा किया गया है। हम सब केवल सेवक हैं।

क्लोविस चैपल ने जहाज़ पर समुद्र पार करने की बात बताई। उसने पहली बार समुद्री यात्रा की थी जो उसे बहुत लम्बी लगी थी। इस समुद्री यात्रा में वह इतना कमजोर हो गया कि खड़ा भी नहीं हो सकता था। उसने बताया कि उसका सोने का स्थान सबसे ऊपर था और वहां सोना उसके लिए असहनीय था। उसने बताया कि उसे लगा कि वह मरने वाला है। उसके नीचे की सीट वाले आदमी ने जो उसके लिए बिल्कुल ही अजनबी था देखा कि वह कितना बीमार है, और उस दया से जो उसे सांस देने वाली लगी, सुझाव दिया कि हम आपस में सीट बदल लेते हैं। फिर वह उसकी सहायता ऐसे करने लगा जैसे कोई नर्स किसी रोगी की करती है। चैपल की किसी बिनती के बिना ही, उसने बड़ी कोमलता से जल्दी-जल्दी जो सहायता कर सकता था, की। चैपल ने बताया कि वह उस आदमी को वर्षों तक याद करता रहा क्योंकि उसके लिए सेवा करना जीवन का एक ढंग था। वह अवश्य ही एक सेवक की तरह सोचता होगा, और इस कारण वह जहां भी गया चाहे वह घर हो या बाहर, सेवक बनकर ही रहा।

मसीह के अनुयायियों को सेवक बनना बालों में कंघी करने या पैदल चलने की तरह ही स्वाभाविक लगना चाहिए, उतना ही स्वाभाविक जितना पानी का गिलास पीना या भोजन करना। हमारे जीवन आत्म केन्द्रित से पुत्र केन्द्रित हो गए हैं और इसका अर्थ केवल एक ही होना चाहिए अर्थात सेवक बनना।

पापियों के लिए मसीह का निमन्त्रण सदा के लिए उद्धार पाने और सेवक बनने के लिए आना है। वह हमसे ''आओ'' (मत्ती 11:28, 29) और ''जाओ'' (मत्ती 28:19, 20) कहता है। वह आने वाले हर व्यक्ति को स्वीकार करता है, परन्तु किसी को भी वैसा नहीं छोड़ता जैसा वह उसके पास आने के समय होता है। वह हमें पापियों के रूप में ग्रहण करता है, परन्तु मनुष्यों को सेवकों में परिवर्तित कर देता है। इसलिए उसकी सच्ची कलीसिया सेवक के सेवकों से ही बनी है।

क्या आप मसीह के सेवक हैं ?

अध्ययन एवं चर्चा के लिए प्रश्न

1. संक्षेप में ''सेवक'' की परिभाषा दें।
2. ''हम स्वतन्त्र तो हैं फिर भी मसीह के दास हैं'' कथन पर चर्चा करें।
3. बताएं कि मसीह के अनुसार, सेवक होना किस प्रकार महान बनने की ओर ले जाता है (मत्ती 20:25, 26)।
4. ''धर्म के सेवक'' होने का क्या अर्थ है?
5. हम मसीह के क्यों हैं?
6. मसीह के भय में एक दूसरे के ''अधीन'' होने का क्या अर्थ है?
7. कोई अपने भाई का नाश भोजन से कैसे कर सकता है?
8. ''भाइचारे के प्रेम में एक दूसरे के प्रति समर्पित'' होने का क्या अर्थ है?
9. कलीसिया को मसीह के सेवक बनने की इच्छा क्यों करनी चाहिए?
10. हम तीन तरह से किस प्रकार मसीह के कर्जदार हैं?
11. ''मसीह-हम-में'' जीवन के रूप में मसीही जीवन का वर्णन करें।
12. अपने आपको खाली करने वाला मन कौन सा होता है?
13. क्या सेवक बने बिना मसीह के उस उद्देश्य को जो उसने हमें दिया है पूरा किया जा सकता है?
14. मसीह अपने चेलों के पांव धोकर क्या सिखाना चाह रहा था?
15. ''क्रूस के नीचे की भूमि समतल है'' अभिव्यक्ति से क्या भाव है?